International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-03-2023, Accepted: 30-03-2023, Published: 15-04-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 39-42

संयोग साहित्य पत्रिका विशेषांक का प्रदेय

डॉ० उमेश चन्द्र शुक्ल
[1] पी.एच.डी., एसोसिएट प्रोफेसर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानंद कॉलेज परेल, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
संचार माध्यमों के प्रसार के साथ हिंदी पत्र पत्रिकाओं को अवाध गति से समय पर प्रकाशित करना बड़ी चुनौती होता जा रहा है प्संयोग साहित्य पत्रिका के नौ विशेषांक पत्रकारिता के मूल्यों के साथ आम आदमी की आवाज और साहित्यिक संरक्षण के सरोकारों का निर्वाह कर रही है I संयोग साहित्य पत्रिका के नौ विशेषांक देश के नौ राज्यों के साहित्यकारों की रचनाओं को संरक्षण का भगीरथ प्रयास है।

मूल शब्दः संयोग साहित्य पत्रिका, हिंदी पत्र

हिंदी पत्रकारिता के क्षरण के इस दौर में किसी साहित्यिक पत्रिका का लगातार दो दशकों तक प्रकाशन अपने आप में बड़ी घटना है।साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं के बीच मुंबई से प्रकाशित हिन्दी पत्र –पत्रिकाओं में संयोग साहित्य का अपना विशेष स्थान है । अपने स्थापना वर्ष 1995 से लेकर आज तक अनवरत रूप से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका संयोग साहित्य के अंक नियमित रूप से साहित्य कोश की श्री वृद्धि करता रहा। सीमित संसाधनों के साथ देना बैंक में सहायक के रूप में नौकरी करने वाले साहित्यिक रुझान के पं.मुरलीधर पाण्डेय की दृण इच्छा शक्ति एवं अनवरत साधना का परिणाम है। साहित्य साधना के जुनून ने पाण्डेय जी को बैंक की नौकरी से पूर्व सेवा निवृति के लिए मजबूर किया।बैंक और पत्रिका दोनों का साथ–साथ चलना चुनौती भरा पथ था।पाण्डेय जी ने संयोग साहित्य पत्रिका का मालिकाना और संपादकत्व को स्विकार किया।बैंक की सेवा मुक्त हुए।पत्रिका का प्रवेशांक 48 पेज़ का था। साधन का अभाव पर कुछ कर गुजरने की इच्छा शक्ति बैंक की नौकरी साथ पत्रिका का संचालन चुनौती भरा कार्य था ।पाण्डेय जी ने पूर्ण समर्पण एवं निष्ठा साथ अपने समय की विसंगतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करने के लिए संयोग साहित्य का प्रकाशन किया ।पत्रकारिता दो धारी तलवार पर चलने सरीखा है सही उपयोग हो तो व्यवस्था के विसंगतियों को काटती–छाँटती है,ज़रा सी असावधानी या लाभ–लोभ के चक्कर में अपने उद्देश्य को भुलाकर विसंगति पैदा करने लगती है। मुरलीधर पाण्डेय चुनौतियों के साथ सच के पक्षधर रहे ———

राह खतरों से भरा है पर ठहरता कौन है,
मौत है जीवन का सच तो सच डरता कौन है ॥
आना–जाना रात–दिन पीना–पिलाना जिंदगी,
अब हलाहल हा या अमृत उससे डरता कौन है ॥1 माटी की आवाज 26

पत्रिका का अंक समय पर प्रकाशित होते रहे आज तक क्रमशः लगभग 72 साधारण अंक और 09 विशेषांक प्रकाशित हो चुके है।संयोग साहित्य को देश के ख्यातिलब्ध कई दर्जन साहित्यकारों स्नेह और आशिर्वाद मिलता रहा है।ऐसे दौर में जब एक एक कर हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ दम तोड़ रही हो । किसी न किसी पत्रिका के बंद होने की खबरे मिलती हों तो दूसरी ओर संयोग साहित्य का बिना किसी सरकारी एवं गैर सरकारी अनुदान के अनवरत अंक –दर–अंक प्रकाशित होता जा रहा है ।यह सम्पादक के त्याग,समर्पण एवं दृढ इच्छा शक्ति का सुफल है । सीमित संसाधनों के साथ अकेले एक एक व्यक्ति का प्रकाशन से जुडी सभी जिम्मेदारियों का निर्वहन किसी घटना से कम नहीं है –

"विश्व को उपहार मेरा ।
पा जिन्हें धनपति, अकिंचन,
खो जिन्हें सम्राट निर्धन, भावनाओं से भरा है,

आज भी भण्डार मेरा। विश्व को उपहार मेरा "2 हरिवंश राय बच्चन विशेषांक संयोग साहित्य 73
संयोग साहित्य ने कुल नौ विशेषांक प्रकाशित किए है । विशेषांक प्रकाशन की कडी में पहला विशेषांक जनवरी –मार्च 1995 में डॉ. हरिवंश राय बच्चन विशेषांक के रूप में प्रकशित हुआ है। जिसमें 142 पृष्ठों में कुल 32 समीक्षकों के शोध आलेख प्रकशित हुए है। इस अंक में बच्चन जी कुछ कविताएँ तथा पत्र भी प्रकशित है। डॉ. नगेन्द्र, रमानाथ त्रिपाठी, वीरेंद्र जैन डॉ.गणेशदत्त सारस्वत, अंनत कुमार,, विनोद कुमार, बालकवि बैरागी, आदि का साहित्यिक योगदान तथा संपादक की गहन साधना का परिणाम बच्चन विशेषांक अनुसन्धान कर्ताओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ।बच्चन विशेषांक ने संपादकको नई दृष्टि प्रदान की,जैसे पत्रकारिता का उद्देश्य हाथ लग गया हो । बच्चन जी के शब्दों में –

"अपने से बाहर निकल देख,
है विश्व खड़ा बाँहे पसार
तूँ एकाकी तो गुनाहगार ॥3

हरिवंश राय बच्चन विशेषांक संयोग साहित्य पृष्ठ– 79
संयोग साहित्य के विशेषांकों की कड़ी में मुरलीधर पाण्डेय के सम्पादन तथा चाँद शेरी (कोटा)के अतिथि संपादकत्व में ष्राजस्थानी काव्य विशेषांक ष के रूप में जनवरी से मार्च 2008 अंक प्रकाशित होता है ।जिसमें कुल 128 पृठों में लगभग 195 रचनाकारों को समाहित किया गया है ।राजस्थान की शायरी की मुखर अभिव्यक्ति संपादन की शक्ति और सामर्थ्य है ——

"अंगनाई छटपटा रही हैं, वापस आ
घर की चौखट बुला रही है, वापस आ
कपडे लत्ते सूख रहे हैं डौली पर
धूप अकेली नहा रही है वापस आ ॥4 राजस्थानी काव्य विशेषांक संयोग साहित्य पृष्ठ–23

यह राजस्थानी कविता की सशक्त प्रस्तुति का दस्तावेजी प्रयास है। जहाँ हम काव्य परम्परा के लगभग तीन पीढ़ियों की काव्य यात्रा का बीज तत्व है ।

"तुम्हें अर्पण ये मेरे शेर मेरी कल्पना के हैं
कि जैसे आरती में फूल ये आराधना के हैं ॥5 राजस्थानी काव्य विशेषांक संयोग साहित्य पृष्ठ– 69

आर.पी। शर्मा महरिष के शोध आलेख,अतिथि संपादक चाँद शेरी का कुशल संपादन एवं संपादक पाण्डेय जी का संरक्षण पाकर विशेषांक विशेष बन पड़ा है । गीत,ग़ज़ल,दोहे कविता और काव्य खण्ड को लेकर अंक सराहनीय और संग्रणीय है ।राजस्थान सरकार एवं महामहिम राज्यपाल के हाथों प्रसस्ति पत्र भी मिला । पं.मुरलीधर पाण्डेय के कुशल संपादन और डॉ.प्रतीक मिश्र के अतिथि संपादकत्व में संयोग साहित्य का ष्उत्तर प्रदेश काव्य विशेषांक ष एक बड़ी घटना है । 304 पृष्ठों में संकलित यह विशेषांक करीब 252 रचनाकारों को स्थान प्रदान करता है ।उत्तर प्रदेश विशेषांक हिन्दी साहित्य के लिए दिशा निर्देशन का कार्य करता है । विशेषांक सारी विचारधाराओं को अकुंठ भाव से पत्रिका में समान स्थान देता है ।अदम गोंडवी,गोपालदास नीरज,चन्द्रशेखर मिश्र,किसन सरोज,मुनीर बख्स आलम,कुवंर बेचौन,सरीखे साहित्यकारों,रचनाकरों को स्थान दिया गया है ।उत्तर प्रदेश के लगभग सभी बड़े रचनाकरों को एक प्लेटफार्म पर लाकर खड़ा करने का सारस्वत प्रयास सफल रहा । सभी की प्रायः एक रचना समाहित हो पाई है ।प्रकाशनार्थ लगभग 1700 पेज की सामग्री प्रतीक मिश्र के अतिथि सम्पादन में संग्रहित हुई थी ।उत्तर प्रदेश विशेषांक संग्रहणीय है ।
संयोग साहित्य के विशेषांकों की श्रृंखला में अक्टूबर से दिसम्बर 2009 अंक बिहार काव्य विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ । अतिथि सम्पादक डॉ.इंदु सिन्हा एवं पत्रिका के सम्पादक मुरलीधर के कुशल सम्पादन में यह भगीरथ प्रयास रहा । लगभग चार वर्षों के अनवरत साधना का सुपरिणाम रहा बिहार काव्य विशेषांक बिहार काव्य विशेषांक में लगभग 150 रचनाकारों को समाहित किया जा सका है । विशेषांक में तीन पीढ़ियों को एक साथ रखा गया है । जिनमे कुछ नाम प्रमुखता से लिए जा सकते है । डॉ. संजय सहाय, नचिकेता, डॉ. अनिरुद्ध सिन्हा, सत्यनारायण, चन्द्रकान्त,, अरुण शीतांश, अनन्त मोहनदास ह्रदयेश्वर, श्याम सुंदर घोष, शालिग्राम सिंह ––

पीपर –पाकड़ को पूछे कौन
गुलमोहर के गाँव हुए मौन

कि अब तो तरुओं के राजा ताड़ हुए ॥6 बिहार काव्य विशेषांक संयोग साहित्य पृष्ठ– 106
पंक्तियाँ सब कुछ संकेत में व्यक्त कर जाती है ।विद्यापति और गौतम बुद्ध की तप स्थली, हिंदी कविता की उर्बर जमीन जहाँ दिनकर की हुंकार है तो बा नागार्जुन का सघन जनवाद । बिहार काव्य विशेषांक आधुनिक कवियों की कविता का प्रतिनिधित्व करने में कुछ हद तक सफल रहा है।
काव्य विशेषांक मध्य प्रदेश की संकल्पना के मूल में बिहार काव्य विशेषांक की सफलता की ऊर्जा कही न कहीं से निहित है । सम्पादक मुरलीधर पाण्डेय की संकल्पना में मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक 2008 में ही आने लगा था जब प्रकाशनार्थ सामग्री प्रचुर रूप से आने लगी । सामग्री चयन के लिए संपादक मंडल को जद्दोजहद करनी पड़ती । किस रचना को रखे और किस कवि को निकाल दे । निर्णय गुणवत्ता को ध्यान में रख कर किया जाना निश्चित हुआ ।अतिथि सम्पादक की जिम्मेदारी सहर्ष बटुक नाथ चौधरी (भोपाल)ने स्विकार कर ली । मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक में 210 कवियों को समाहित किया जा सका ––
यह घडी बिल्कुल नहीं है शान्ति और संतोष की
श्सूर्य निष्ठा श सम्पदा होगी गगन के कोष की
यह धरा का मामला है घोर काली रात है
कौन जिम्मेदार है यह सभी को ज्ञात है
रौशनी की खोज में किस सूर्य के घर जाओगे
'दीप निष्ठां' जगाओं अन्यथा मर जाओगे ॥7 बाल कवि बैरागी, मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक से पृष्ठ 47
बाल कवि बैरागी, कैलाश चन्द पन्त, डॉ. किशन तिवारी, परशुराम शुक्ल, दिवाकर वर्मा, राम मेश्राम, पूनम चन्द तिवारी ढ स्वामी राजेंद्र नाथ मल्होत्रा, चन्द्रसेन विराट, प्रदीप चौबे, माणिक वर्मा, सुरेश शर्मा, माताप्रसाद शुक्ल, उमाश्री, सूर्यकांत नागर ढब्रम्हजीत गौतम, डॉ. इसाक अश्क डॉ. महेन्द्र भटनागर आदि का विशेष योगदान रहा –है –
लब्ज़ मैंने ही तराशे हैं, हुनर मेरा है,
यूँ ग़ज़ल तेरी है लहजे में,असर मेरा है ॥8 डॉ. महेन्द्र अग्रवाल, मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक से पृष्ठ 89
संयोग साहित्य का काव्य विशेषांक मध्य प्रदेश के समय का ऐसा लेखा–जोखा है जिसके आईने में हम हिन्दी कविता की पुख्ता जमीन और मध्य प्रदेश के बदलते परिवेश,राजनैतिक परिदृश्य एवं सांस्कृतिक विरासत के साथ–साथ कलमकारों के कलम की ताशीर को समझ सकते है।
हिन्दी गज़ल के सशक्त हस्ताक्षर पिंगलाचार्य आर.पी। शर्मा 'महरिष' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रत विशेषांक का प्रकाशन जुलाई से सितंबर 2013 में विशेषांक के रूप में हुआ ।इसके कुल 148 पृष्ठों में 26 शोध आलेख,,14 साक्षात्कार,,09 समीक्षा,एवं 15 पृष्ठों में महरिष जी की ग़ज़लों को स्थान दिया गया है –
इरादा वही जो अटल बन गया है
जहाँ ईट रख्खी महल बन गया है ॥9 पिंगलाचार्य आर.पीशर्मा श्महरिष'विशेषांक से पृष्ठ –28
मुरलीधर पाण्डेय के कुशल संपादन में विशेषांक निखर उठा है । विशेषांक हिन्दी ग़ज़ल के अनुसंधान कर्ताओं के लिए मीटर सरीखा है । जिसके आईने में हिन्दी–उर्दू गज़ल का तुलनात्मक अध्यययन किया जा सकता है । विशेषांक ग़ज़लकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का दस्तावेजीकरण है । हिन्दी गज़ल के लिए एक साथ इतनी सामग्री एवं इतनी दृष्टि का सम्पादन विशेष है ––
लब कि ढूढा किए क़ाफ़िए मगर
अश्क आए तो पूरी ग़ज़ल कह गए ॥10 पिंगलाचार्य आर.पी। शर्मा 'महरिष विशेषांक से पृष्ठ 47
पिंगलाचार्य आर.पी.शर्मा श्महरिष श्के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रत विशेषांक हिन्दी ग़ज़लकरो को दशा–दिशा देने में पूर्ण समर्थ है तो दूसरी तरफ उर्दू ग़ज़ल गो को यह बताने में पूर्ण समर्थ है की हिन्दी में अच्छी ग़ज़ल कही जा सकती है बशर्ते हिन्दी गजलकार स्वयं को विधा का विद्यार्थी मानकर किसी गुरु के संरक्षण में रहकर लेखन करे । विशेषांक संग्रहणीय है ।
संयोग साहित्य के विशेषांकों की कड़ी में उत्तराखंड काव्य विशेषांक का प्रकाशन 16 वें वर्ष के अंक 04 अर्थात अक्टूबर से दिसम्बर 2013 अंक के रूप में हुआ ।यह अंक संपादक मुरलीधर पाण्डेय एवं अतिथि संपादक डॉ.दिनेश चमोला श्शैलेशश देहरादून के लिए चुनौती भरा रहा,कारण स्वनामधन्य पूर्व संपादक की अरुचि और असहयोग के कारण अंक लगभग तीन वर्ष बाद प्रकाशित हो पाया । "देवभूमि उत्तराखण्ड के कण–कण में कविता का स्फुरण स्वतः भाव विभोर निरक्षर घसियारियां व पशुचारकों के आश काव्यों,महाकाव्यों के भावुक सर्गों से प्रकृति का कण–कण लाभान्वित होता रहता है । ष्उत्तराखण्ड काव्य

विशेषांक में देवभूमि के लगभग एक सौं रचनाकारों को समाहित किया जा सका है –

कैनवास में उतरी हुई, चित्र हो तुम,
रिमझिम बरसते हुए, सावन हो तुम,
चाहत को दिया, तुमने नूतन धारा,
मेरे जीवन में, कर दिया उजियारा ॥11 उत्तराखण्ड काव्य विशेषांक संयोग साहित्य पृष्ठ– 109

विशेषांक का प्रकाशन संयोग साहित्य परिवार के लिए नयी दिशा देने में सहायक रहा । पहली रचना का कथ्य बहुत कुछ बयां कर जाता है । कितना कुछ सिखने के लिए मिला अगर कहना हो तो इसी अंक से राजेश आनन्द के शब्दों में कहे तो ––
इस तरह भी दोस्तों अक्सर मजा देते है जख्म,
दास्ता दिल की मुकम्मल जब सुना देते हैं जख्म ॥12 राजेश आनन्द उत्तराखण्ड काव्य विशेषांक पृष्ठ– 109
बानगी में इतना कुछ छिपा है अंक बरबस मन मोह लेता है । उत्तराखण्ड की लेखनी में अपने विरासत के प्रति कितनी गहरी आस्था है । नयापन सहज स्वीकार न करके जैसे पीढ़ी से विरासत सजोने की बात करते है । नया स्वागत के योग्य है पर आधार पूर्वजों को सहेजने में है ––
बेटा !
बना होगा उत्तरांचल राज्य
तुम्हारे लिए नवां–नवेला ॥ 13 डॉ.दिनेश चमोला 'शैलेश' उत्तराखण्ड काव्य विशेषांक संयोग साहित्य पृष्ठ–19
विशेषांक उत्तरांचल का प्रतिनिधित्व करने में पूर्ण समर्थ है ।
पं. मुरलीधर पाण्डेय सम्पादन में प्रकशित हिमाचल प्रदेश काव्य विशेषांक की संकल्पना देहरादून में शायर जनाब राशिद आरफ़ी से मिलने के बाद हुई ।सामग्री संग्रह में कुल्लू निवासी कवि जयदेव विद्रोही का निर्लिप्त योगदान उल्लेखनीय है ।वर्ष 17 के अंक ३–4 जुलाई से दिसम्बर 2014 के संयुक्तांक के रूप में हिमाचल प्रदेश काव्य विशेषांक कुल 280 पृष्ठों के साथ प्रकाशित हुआ । हिमाचल प्रदेश काव्य विशेषांक में कुल १०६ कवियों तथा 06 आलेख और 04 समीक्षा प्रकाशित है । विशेषांक प्रदेश के सम्पूर्ण साहित्यिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करने में लगभग सफल रहा है । अंक में संग्रहित रमेश चन्द्र मस्ताना की पंक्तियाँ जैसे संपादक एवं विशेषांक लिए ही लिखी गई हो ––
आया जो खुशबू झौंका,हम देखते ही रह गए,
पाया जो प्यार का मौक़ा,हम देखते ही रह गए ॥14 रमेश चन्द्र मस्ताना हिमाचल प्रदेश काव्य विशेषांक 98
डॉ. प्रेमलाल गौतम 'विद्यार्थी' द्वारा लिखित हिमाचलीय कविता–यात्रा रूविहंगावलोकन आलेख विशेषांक में संग्रहित कवियों परिचयात्मक प्रस्तुति अंक की सम्पूर्णता और शक्ति बढ़ा देता है । कोई भी पाठक सहज ही हिमाचल के काव्य परिवेश और हिंदी काव्य की विकास यात्रा से परिचित हो जाता है ।अंक हिमाचली काव्य पर अनुसंधानकर्ताओं के लिए सन्दर्भ ग्रन्थ जैसा है ––

देखे जो हसीन ख़्वाब केवल आप के लिए
बुने सपने बे–हिसाब, केवल आप के लिए ॥15 राजस्थानी काव्य विशेषांक पृष्ठ–77

हिमाचल प्रदेश काव्य विशेषांक की पंक्तियाँ हमसे कुछ अपील करती है दूसरी ओर सरोकारों को रेखांकित करती चलती है। अंक संग्रहणीय है ।
संयोग साहित्य पत्रिका का जनवरी से जून 2016 संयुक्तांक अंक 1 –2 में हरियाणा काव्य विशेषांक प्रकाशित हुआ ।पं. मुरलीधर पाण्डेय के साथ अतिथि संपादक के रूप में डॉ.राम निवास श्मानव श (हिसार) ने हरियाणा काव्य विशेषांक में अपनी सफल भूमिका का निर्वाह किया ।विशेषांक में कुल 85 कवियों के साथ आठ शोध आलेख और 04 समीक्षा प्रकाशित है विशेषांक लगभग तीन वर्षों के अथक परिश्रम का परिणाम है ––
रैयत की कमरें झुकी हुई, हुजूर सलाम वही,
पुलिस के मुँह पर साले, नमक–हराम वही,
पी तिरस्कार मैं तो हूँ आज गुलाम वही,
पंजर पर सूखी खाल और काम वही ॥16 –– दीनू का सपना–नलिन हरियाणा काव्य विशेषांक पृष्ठ–54

अंक में हरियाणा के तीन पीढ़ियों को एक साथ स्थान देना। सम्पादकीय चुनौती और ईमानदारी है। जि ससे हम सम्पूर्ण कालखंड को रेखांकित सकते है। डॉ. राम निवास श्मानव श (हिसार) अतिथि संपादन में विशेषांक निखार उठा है । डॉ. सुभाष रस्तोगी द्वारा लिखित शोध आलेख ष्हरियाणा की समकालीन हिन्दी कविता ष हरियाणा के लगभग पाँच दशकों के काव्य परिदृश्य का लेख–जोखा है ––

मैं उन घुप अँधियारों में,सूरज की किरणें भर दूँगा,
जिनकी बुझी हुई आँखों में आशा का उजियार है प्प17

शबनम है, श्रृंगार नहीं है ॥––कवि की कामना –उदय भानु हंस, हरियाणा काव्य विशेषांक से पृष्ठ 105
श्याम वशिष्ठ शाहिद पंक्तियाँ जैसे आज की नयी पीढ़ी का पुरजोर प्रतिनिधित्व करती है ।अल्फाज के आगे जज्बात को बल प्रदान करती है ।

तुम्हारी चिठ्ठियों को जब मैं गंगा में बहा दूँगा,
तो सोचा था की मैं भी आग पानी में लगा दूँगा II 18 श्याम वशिष्ठ शाहिद हरियाणा काव्य विशेषांक से पृष्ठ 67 ––
अब तलक उसूलों पर गुजारी जिंदगी 'उमेश'

उसूलों का मेरी जिंदगी से गहरा नाता है ॥19 – माटी की आवाज–उमेश
आज संयोग साहित्य अपने 09 विशेषांकों और 72 अंकों से प्रकाशित दीप मालिका दो दशकों से अँधेरे के खिलाफ दीप जलाने की ज़िद में अंक–दर–अंक आगे बढ़ता जा रहा है। पत्रिका की गत्यात्मकता अपने समय के रचनाकारों को एक मंच, एक स्थान पर उपलब्ध कराने का विशेष कार्य कर रहा है । वैश्विक दौर में राष्ट्रीयता एवं जीवन मूल्यों के साथ खड़ा संपादक प्रान्तीय गौरव,गरिमा और स्थानीय माटी की गंध से महमहाते विशेषांकों के रूप में माँ भारती की साधना में अपना योग देता जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. माटी की आवाज–डॉ.उमेश शुक्ल आर.के.पब्लिकेशन मुंबई 2023 पृष्ठ– 26
2. हरिवंश राय बच्चन विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई अंक–1 जनवरी–मार्च 1997 पृष्ठ–73,
3. हरिवंश राय बच्चन विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई अंक–1 जनवरी–मार्च 1997 पृष्ठ– 79
4. राजस्थानी काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई, वर्ष 11,अंक 1 जनवरी–मार्च 2008 पृष्ठ–23
5. राजस्थानी काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई, वर्ष 11,अंक 1 जनवरी–मार्च 2008 पृष्ठ– 69
6. मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई,वर्ष 12,अंक 4 अक्टूबर – दिसंबर 2009 पृष्ठ 47

7. मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई,वर्ष 12,अंक 4 अक्टूबर – दिसंबर 2009 पृष्ठ 47
8. मध्य प्रदेश काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई,वर्ष 12,अंक 4 अक्टूबर – दिसंबर 2009 पृष्ठ 89
9. पिंगलाचार्य आर.पीशर्मा श्महरिष'विशेषांक वर्ष 16,अंक 3 जुलाई–सितम्बर 2013 पृष्ठ–28
10. पिंगलाचार्य आर.पी. शर्मा श्महरिष विशेषांक वर्ष 16,अंक 3 जुलाई–सितम्बर 2013पृष्ठ 47
11. उत्तराखण्ड काव्य विशेषांक संयोग साहित्य वर्ष 16 अंक 4 अक्टूबर–दिसंबर 2013 पृष्ठ–109
12. उत्तराखण्ड काव्य विशेषांक संयोग साहित्य वर्ष 16 अंक 4 अक्टूबर–दिसंबर 2013पृष्ठ–109
13. उत्तराखण्ड काव्य विशेषांक संयोग साहित्य वर्ष 16 अंक 4 अक्टूबर–दिसंबर 2013 पृष्ठ–19
14. हिमाचल प्रदेश काव्य विशेषांक संयोग साहित्य वर्ष 17,अंक 3–4 जुलाई –दिसंबर 2014पृष्ठ–98
15. राजस्थानी काव्य विशेषांक संयोग साहित्य वर्ष 11,अंक 1 जनवरी–मार्च 2008 पृष्ठ–77
16. हरियाणा काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई वर्ष 19अंक 1–2 जनवरी–जून 2016 पृष्ठ–54
17. हरियाणा काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई वर्ष 19अंक 1–2 जनवरी–जून 2016 पृष्ठ 105
18. हरियाणा काव्य विशेषांक संयोग साहित्य मुंबई वर्ष 19अंक 1–2 जनवरी–जून 2016 पृष्ठ 67
19. माटी की आवाज–उमेश शुक्ल आर.के. पब्लिकेशन मुंबई 2023 पृष्ठ 17